نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ

कोई मददगार[9] आस्मान की क़सम जिस से मींह उतरता है[10] और ज़मीन की जो उस से खुलती है[11] बेशक क़ुरआन

لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّ

ज़रूर फ़ैसले की बात है[12] और कोई हंसी की बात नहीं[13] बेशक काफ़िर अपना सा दाउं चलते हैं[14] और

اَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾ ع ١٧

मैं अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता हूं[15] तो तुम काफ़िरों को ढील दो[16] उन्हें कुछ थोड़ी मोहलत दो[17]

اٰيَاتُهَا ١٩ — (٨٧) سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ ٨ — رُكُوْعُهَا ١

सूरए आ'ला मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِیْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾ وَالَّذِیْ قَدَّرَ

अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बुलन्द है[2] जिस ने बना कर ठीक किया[3] और जिस ने अन्दाज़े पर रख कर

فَهَدٰى ﴿٣﴾ وَالَّذِیْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾

राह दी[4] और जिस ने चारा निकाला फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤى ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا

अब हम तुम्हें पढ़ाएंगे कि तुम न भूलोगे[5] मगर जो अल्लाह चाहे[6] बेशक वोह जानता है हर खुले और

मुराद अ़क़ाइद और निय्यतें और वोह आ'माल हैं जिन को आदमी छुपाता है, रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला उन सब को ज़ाहिर कर देगा। **9 :** या'नी जो आदमी मुन्किरे बअ़्स है न उस को ऐसी कुव्वत होगी जिस से अ़ज़ाब को रोक सके न उस का कोई ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके। **10 :** जो अर्ज़ी पैदावार नबात व अश्जार के लिये मिस्ल बाप के है। **11 :** और नबातात के लिये मिस्ल मां के है और येह दोनों अल्लाह तआ़ला की अ़जीब ने'मतें हैं और इन में क़ुदरते इलाही के बे शुमार आसार नुमूदार हैं जिन में ग़ौर करने से आदमी को बअ़्से बा'दल मौत के बहुत से दलाइल मिलते हैं। **12 :** कि ह़क़्क़ो बात़िल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ कर देता है। **13 :** जो निकम्मी और बेकार हो। **14 :** और दीने इलाही के मिटाने और नूरे ह़क़ को बुझाने और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ईज़ा पहुंचाने के लिये त़रह़ त़रह़ के दाउं करते हैं। **15 :** जिस की उन्हें ख़बर नहीं **16 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **17 :** चन्द रोज़ कि वोह अ़न्क़रीब हलाक किये जाएंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और बद्र में उन्हें अ़ज़ाबे इलाही ने पकड़ा "وَنُسِخَ الْاِمْهَالُ بِاٰيَةِ السَّيْفِ" **1 :** "सूरतुल आ'ला" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, बहत्तर कलिमे, दो सो इकानवे ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी उस का ज़िक्र अ़ज़्मतो एह़तिराम के साथ करो। ह़दीस में है : जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को अपने सज्दे में दाख़िल करो या'नी सज्दे में "سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰى" कहो। (ابوداؤد) **3 :** या'नी हर चीज़ की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़रमाई जो पैदा करने वाले के इल्मो ह़िक्मत पर दलालत करती है। **4 :** या'नी उमूर को अज़ल में मुक़द्दर किया और उस की त़रफ़ राह दी या येह मा'ना हैं कि रोज़ियां मुक़द्दर कीं और उन के त़रीक़े कस्ब की राह बताई। **5 :** येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बिशारत है कि आप को ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की ने'मत

www.dawateislami.net

يَخْفٰى ۝٧ وَ نُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝٨ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝٩

छुपे को और हम तुम्हारे लिये आसानी का सामान कर देंगे[7] तो तुम नसीहत फ़रमाओ[8] अगर नसीहत काम दे[9] अन्क़रीब

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝١٠ وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١١ الَّذِیْ یَصْلَى النَّارَ

नसीहत मानेगा जो डरता है[10] और इस[11] से वोह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में

الْكُبْرٰى ۝١٢ ثُمَّ لَا یَمُوْتُ فِیْهَا وَ لَا یَحْیٰى ۝١٣ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝١٤

जाएगा[12] फिर न उस में मरे[13] और न जिये[14] बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा[15]

وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝١٥ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا ۝١٦ وَ

और अपने रब का नाम ले कर[16] नमाज़ पढ़ी[17] बल्कि तुम जीती दुन्या को तरजीह देते हो[18] और

الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰى ۝١٧ اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝١٨

आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली बेशक येह[19] अगले सहीफ़ों में है[20]

ع ١٩/١٢

صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى ۝١٩

इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में

ایاتها ٢٦ ۝ ٨٨ سُوْرَةُ الْغَاشِیَةِ مَكِّیَّةٌ ٦٨ ۝ رکوعها ١

सूरए ग़ाशियह मक्किय्या है, इस में छब्बीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

बे मेह्नत अ़ता हुई और येह आप का मो'जिज़ा है कि इतनी बड़ी किताबे अ़ज़ीम बिग़ैर मेह्नतो मशक़्क़त और बिग़ैर तक्रार व दौर के आप को हिफ़्ज़ हो गई। (جمل) **6 :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना वाक़ेअ़ न हुवा और अल्लाह तआ़ला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें। (جمل) **7 :** कि वह्य तुम्हें बे मेह्नत याद रहेगी। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि आसानी के सामान से शरीअ़ते इस्लाम मुराद है जो निहायत सह्ल व आसान है। **8 :** इस क़ुरआने मजीद से **9 :** और कुछ लोग इस से मुन्तफ़ेअ़ हों। **10 :** अल्लाह तआ़ला से **11 :** पन्दो नसीह़त **12 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा और उ़त्बा बिन रबीआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई। **13 :** कि मर कर ही अ़ज़ाब से छूट सके **14 :** ऐसा जीना जिस से कुछ भी आराम पाए। **15 :** ईमान ला कर या येह मा'ना हैं कि उस ने नमाज़ के लिये त़हारत की, इस तक़्दीर पर आयत से नमाज़ के लिये वुज़ू और ग़ुस्ल साबित होता है। (تفسیر احمدی) **16 :** या'नी तक्बीरे इफ़्तिताह़ कह कर **17 :** पन्जगाना। **मस्अला :** इस आयत से तक्बीरे इफ़्तिताह़ साबित हुई और येह भी साबित हुवा कि वोह नमाज़ का जुज़्व नहीं है, क्यूं कि नमाज़ का इस पर अ़त़्फ़ किया गया है और येह भी साबित हुवा कि इफ़्तिताह़ नमाज़ का अल्लाह तआ़ला के हर नाम से जाइज़ है। इस आयत की तफ़्सीर में येह कहा गया है कि تزکّٰی से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है। (تفسیر مدارک واحمدی) **18 :** आख़िरत पर। इसी लिये वोह अ़मल नहीं करते जो वहां काम आएं। **19 :** या'नी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आख़िरत का बेहतर होना **20 :** जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए **1 :** ''सूरए ग़ाशियह'' मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छब्बीस आयतें, बानवे कलिमे, तीन सो इक्यासी ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net